"लोक परंपराओं में न्यीशी समुदाय की मान्यता"

ब्याबंग याना
सहायक प्रोफ़ेसर
शासकीय महाविद्यालय दोईमुख
जिला-पापुम पारे,७९१११२
अरुणाचल प्रदेश.

प्रस्तावना:

पूर्वोत्तर भारत के मनोरम और हरियाली घाटियों एवं पर्यटक स्थलों से भरपूर अरुणाचल प्रदेश चारों ओर वादियों से घिरा हुआ देश है ।यह एक ऐसा प्रदेश है जिसे लघु भारत के नाम से भी जाने जाते हैं।यहां विभिन्न जन जातियों का वास हैं।इस प्रदेश में मुख्य २६ जनजातीय हैं और लगभग १०० के करीब उप- जनजातीय हैं। इन जनजातियों में से मुख्य जनजातीय समुदाय है "न्यीशी"।इस समुदाय के लोगों का विस्तार मुख्य रूप से नौ जिलों में हैं ।जैसे- पापुम- पारे , कयी-पान्योर , कामले , करा- दादी , ईस्ट- कामेंग ,पाक्के -केस्सांग , बिछोम एवं दापोरीजो में रहते हैं ।असम के पिसुला आदि में भी न्यीशी लोगों का निवास स्थल है। न्यीशी जन समुदाय के लोग "तानी" के वंशज है। इस वंश के लोगों में साहस, अटूट धैर्य, दृढ़ता , उमंग पूर्व अपने कार्य को पूर्ण रूप देने की सक्षमता रखते हैं । इन लोगों की संस्कृति, परंपरा, रीति-रिवाज एवं मान्यताएं आदि पूर्वजों के द्वारा बनाए गए पर्व- त्यौहारों, परंपरा को वे आज भी अपनाते आ रहे हैं ।यही परंपरा लोक परंपराओं, मान्यताओं, विश्वास, संस्कृति, प्रथा, रीति -रिवाज के अंतर्गत आने लगे । इन्हीं के आधार पर न्यीशी समुदाय के मान्यता एवं विश्वासी भावों को देख सकते हैं ।

परंपरा:

लोक- साहित्य अमरबेन की तरह सदैव हर-भरा रहने वाला है और रहता है। लोक संस्कृति शब्द मनुष्य के जीवन के उन पहलुओं पर प्रकाश डालते हैं जहां लोकजीवन के ग्रामीण परिवेश का चित्रण करता है। परम्परा किसी भी समाज या समुदाय के लिये अत्यन्त आवश्यक हैं। लोक संस्कृति लोक साहित्य का अभिन्न अंग है। लोक साहित्य के द्वारा लोक- गीत, लोक -गाथा, लोक-कथाएं आदि लोक के जनजातिय समुदाय को एक सूत्र में बांधे रखता है।

इसके माध्यम से ही समाज, समुदाय को एक सूत्र में फ़िरोकर कर रखने की सामर्थ्य रखते हैं।परम्परा ही एक ऐसा जरिया है जहां हम समाज के अमूल्य ज्ञान को पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तान्तरण कर सकते हैं। यहां के रहन-सहन, रीति- रिवाज, परंपराएं , खान-पान , धार्मिक अनुष्ठान आदि के जरिए सामूहिक भावों का अभिव्यक्ति का साधन बनते हैं। लोक संस्कृति के अंतर्गत समाज की लोक मान्यताओं, विश्वास, अंधविश्वास एवं रूढ़ियां आदि भी समावेश रहती है।

लोक परंपराएं भी लोक संस्कृति का एक अभिन्न अंग है।लोक संस्कृति के मुख्य पांछः आधार माने गये हैं: १) लोक विश्वास एवं लोक परंपराएं, २) रीति-रिवाज एवं गूढ़ आग्रह ,३) धार्मिक,ऐतिहासिक,सामाजिक तथा राजनीतिक जीवन, ४) लोक कलाएं,५) लोक भाषा। इन परंपराओं के भीतर लोक की विश्वासी भावना भी देखने को मिलती है और कहीं-कहीं अंधविश्वास या रूढ़िवादिता की भाव भी देखने को मिलती है।

इन्हीं लोक परंपराओं में से एक विश्वासी प्रथा एवं कारूणिक मान्यताओं से युक्त परंपरा का उदाहरण अरुणाचल प्रदेश के न्यीशी समुदायों के विश्वास एवं प्रथा को देख सकते हैं। न्यीशी समाज के एक अभिन्न परंपरा पर नजर डालकर हम देख सकते हैं।

सिमी प्रथा की मान्यता

न्यीशी भाषा में बुजुर्ग को **न्येकाम** शब्द से जाने जाते हैं। न्यीशी जन समुदाय में 'सिमी' शब्द एक बुजुर्ग व्यक्ति के नाम पर रखे जाने वाले **'भोज'** है जो कि अंग्रेजी के पर्याय शब्द **'लास्ट सफर** ' के नाम से भी कह सकते हैं। यह एक कारूणिक भावों से परिपूर्ण रिवाज है। इस रिवाज को जब व्यक्ति ८० या ८५ वर्ष के उम्र के आस-पास इस भोज का आयोजन किया जाता है। या यूं भी कह सकते हैं कि इसे एक रिवाज अथवा प्रथा के अंतर्गत भी रखा जा सकता है। 'सिमी' भोज का आयोजन करने वाले व्यक्ति स्वयं भी कर सकते हैं या (बुजुर्ग माता या पिता के नाम पर)उसके बेटे या बेटी भी इस भोज का आयोजन करवा सकते हैं। इस कार्यक्रम के दौरान हमारे यहां मूल्यवान पशु 'मिथुन' का बलि चढ़ाते हैं ।बलि चढाने से पहले पूजा पाठ आदि धार्मिक अनुष्ठान को पूर्ण कर लेते हैं।जहां पशु को बान्धते है उसे न्यीशी भाषा में ' **युगंड.**' कहते हैं। इसी युगंड. के सामने पुजारी लोग मंत्र आदि का उच्चारण कर अपने देवी-देवताओं का आह्वान करते है कि जिनके नाम पर इस सिमी को रखा गया है विघ्न रहित संपन्न हों। इस रिवाज में सगे संबंधियों, परिजनों एवं संबंधियों इत्यादि के मध्य रखे जाने वाले भोज है। जिसमें जिनके नाम पर रखे गए इस भोज में अपनी बहुमूल्य आभूषणों, संपत्तियों का बंटवारा अपने बच्चों में करते हैं और साथ ही अपने परिजनों, संबंधियों को भी थोड़ा-थोड़ा भेंट स्वरूप उनमें बांट देते हैं ।यदि उनके पास सम्पत्ति न हो तो बंटवारा नहीं करते हैं । इस कार्य के समापन के समय बलि दिए गए मीट में से प्रत्येक आने वाले व्यक्तियों को कुछ-कुछ भाग देते हैं ताकि वह इस भोज में साक्षी के रूप में शामिल हुए थे ।इस समुदाय की यह भी मान्यता है कि जिनके नाम पर यह सिमी रखा जाता है बुजुर्ग की लंबी आयु की कामना करते हैं एवं स्वस्थ हो, कही-कही लम्बी आयु की कामना के लिये इसे नहीं करते हैं। इस भोज को रखने का यह भी महत्व है कि जिस व्यक्ति के नाम पर यह आयोजन अथवा भोज का आयोजन किया जाता है उनका आयु दीर्घ हो एवं स्वास्थ्यमय जीवन हो और उनकी अंतिम मनोकामनाएं पूर्ण हों ।

मची संबंधी मान्यताएं

न्यीशी भाषा में लड़की को **न्येमे,** लड़का को **न्येगा,** बच्चा को **कू,** पत्नि को **न्यहंड.,** पति को **न्यीलू** कहते हैं। जब गर्भवती महिला के गर्भ में पल रहे बच्चे पर और नाभि के गिरने से पहले बुरा प्रभाव पड़ने वाले शब्द को **"मची"** शब्द से अभिहित किये जाते हैं। गर्भावस्था के दौरान हमारे यहां माता-पिता के ऊपर कई सारे पाबंदियां होती है जैसे कि-

१.- जमीन में माता-पिता दोनों में से किसी एक को अकेले खूंटी नहीं गाढ़ना होता है यदि इनमें से किसी एक ने अकेला खूंटी गाढ़ दिया तो बच्चे की शारीरिक वृद्धि सही ढंग से नहीं हो पाती है और दोनों माता-पिता मिलकर खूंटी गाढ़ी तो इसका बच्चे पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। यदि माता या पिता ने अकेले खूंटी गाढ़ दिया तो उसे बाद में स्वयं उस खूँटी को उखाड़ देने पर उसका प्रभाव खत्म हो जाता है।

२-. इसी प्रकार एक और मान्यता यह भी है कि यदि गर्भवती महिला के पति किसी मृत्यु स्थान पर मृत व्यक्ति को अकेला देख लिया या फिर उसे छू ले तो इसका प्रभाव आगामी बच्चे पर असर करता है। नाभि गिरने से पूर्व भी उसे देख ले तो उसका असर बच्चे पर पड़ता है, यही चीज जब माता-पिता साथ में देख ले तो इसका प्रभाव नहीं पड़ता है यदि माता या पिता किसी एक ने अकेला उसे मृत व्यक्ति को

देख लिया या छू लिया तो बाद में तुरंत उस स्थान पर जाकर माता-पिता दोनों मृत व्यक्ति को देख ले या छू ले तो उसका प्रभाव बच्चे पर नहीं पड़ता है यह भी हमारे यहां मान्यता है ।

३.- उसी प्रकार जब गर्भावस्था के दौरान माता और पिता दोनों में से किसी एक को अकेला रस्सी आदि नहीं बांढना चाहिए नहीं तो होने वाले शिशु के पांव में चलते समय पकड हो सकती है जिससे उसे चलने में दिक्क्ते और बार-बार गिर सकती/सकता है।

४.- एक यह भी मान्यता है कि यदि पिता अकेले मछली पकडने के लिये नुकीले कांटे का प्रयोग करने से उस होने वाले शिशु के मुंह पर फ़टने या कटने की निशान रह जाते है।

५.- यह भी मान्यता है कि गर्भावस्था के समय या नाभि गिरने से पूर्व माता या पिता दोनों से किसी एक को अकेला कील इत्यादि दीवार पर नहीं ठोंकना चाहिये अन्यथा शिशु के हृदय पर चोट लग सकते है।

६.- शिशु के जन्म के बाद जब तक नाभि नहीं गिर जाते तब तक सब्जी, अण्डे आदि नहीं तला जाये अन्यथा शिशु के त्वचा पर लाल रंग के चकते निकल आते है। यदि चकते निकले तो इसका भी उपाय कर सकते है कि जिन्होने सब्जी आदि तला वो अपने हाथ में जरा सा पानी ले कर इतन कहना है कि यह मेरे कारण तो नहीं हुआ कह कर पानी को शिशु के बदन पर छूना होता है इससे वह ठीक हो जाता है।

७.- इसी प्रकार जब महिला गर्भवती होती है पति किसी पशु बलि के दौरान उसे देख ले तो यह मान्यता रखते हैं कि आगामी बच्चें की आंख भी बलि के दौरान पशु की आंखों के समान टेढ़े होते है। यदि पति-पत्नी एक साथ उसे देख ले तो उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है । इस मान्यता को लोग आज भी मानते हैं और इसे एकाध लोग आज भी नहीं मानते हैं ।

अत: उपर्युक्त बिन्दुओं के आधार पर यह कह सकते कि हमारे पूर्वजों के द्वारा माने गये नियम, प्रथा, परम्परा, रिवाज आदि आज भी सर्व मान्य है परन्तु आधुनिक युग में इस मान्यता को नकारते है एवं अन्धविश्वास भी कहते है और कुछ लोग आज भी इस मान्यता पर विश्वास करते हैं।

सहायक ग्रन्थ :

१) लोक-साहित्य और संस्कृति-दिग्दर्शन, डा. जय नारायण कौशिक, अविराम प्रकाशन, दिल्ली , द्वितीय संस्करण: २००८

२) ' सिमी', श्रीमति पापि रीमो , लोक कथाकार , सेप्पा ,ईस्ट कामेंग जिला, अरुणाचल प्रदेश, साक्षात्कार , २०/०५/२०२४.

३) 'मची' , श्रीमति ब्याबंग यापा , लोक गायिका, जोल्लंग पापुम-पारे जिला, अरुणाचल प्रदेश,साक्षात्कार , १६/०६/२०२४.

----------xxx----------